दादा भगवान परिवार का

मई - २०२५

अक्रम एक्सप्रेस

छुट्टियों... का... मज़ा...

संपादकीय

बालमित्रों, छुट्टियाँ यानी मज़ा! छुट्टियों में मज़ा करने का कोई न कोई बहाना डीडीमा जंगल ढूँढ़ ही लेता है। इस साल उन्होंने ढूँढ़ा निकाला है, एक कैलेन्डर।

दुनिया के प्रत्येक देश में छुट्टियों की तारीखें अलग-अलग होती हैं। लेकिन कुछ विशेष दिन ऐसे भी हैं जो दुनिया भर में एक ही तारीख को मनाए जाते हैं। देश और दुनिया भर में मई महीने में मनाए जाने वाले सभी विशेष दिनों की तारीखों को इकट्ठा करके डीडीमा जंगल ने एक कैलेन्डर बनाया है। इस कैलेन्डर का सबसे स्पेशल दिन है, पूज्यश्री का बर्थ डे। आइए देखते हैं, इस कैलेंडर में कौन-कौन से विशेष दिन हैं? और डीडीमा जंगल में वे किस प्रकार मनाए गए।

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

May, 2025
Year 13, Issue : 02
Conti. Issue No.: 146
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

कैलेन्डर

डीडीमा जंगल के नोटिस बोर्ड पर मई महीने का कैलेन्डर लगा हुआ था। ऊपर बड़े अक्षरों में लिखा था, 'सेलिब्रेशन मंथ' और नीचे छोटे अक्षरों में लिखा था, 'अधिक जानकारी के लिए आज शाम छः बजे तालाब के पास मिलेंगे।'

ये समारोह कौन से होंगे? किस तरह मनाए जाएँगे? हर कोई यह जानने को उत्सुक था। छः बजे तक पूरा डीडीमा जंगल तालाब के पास पहुँच गया। सबसे पहले थीओ ने सबको ताजा शरबत पिलाया। फिर ज़ोई ने माइक हाथ में लेकर अनाउन्स किया, "इस बार मई महीने में हम अलग-अलग दिन मनाएँगे।" यह सुनकर सभी खुश हो गए। फिर वे दिन कौन-कौन से हैं, उसकी जानकारी दी।

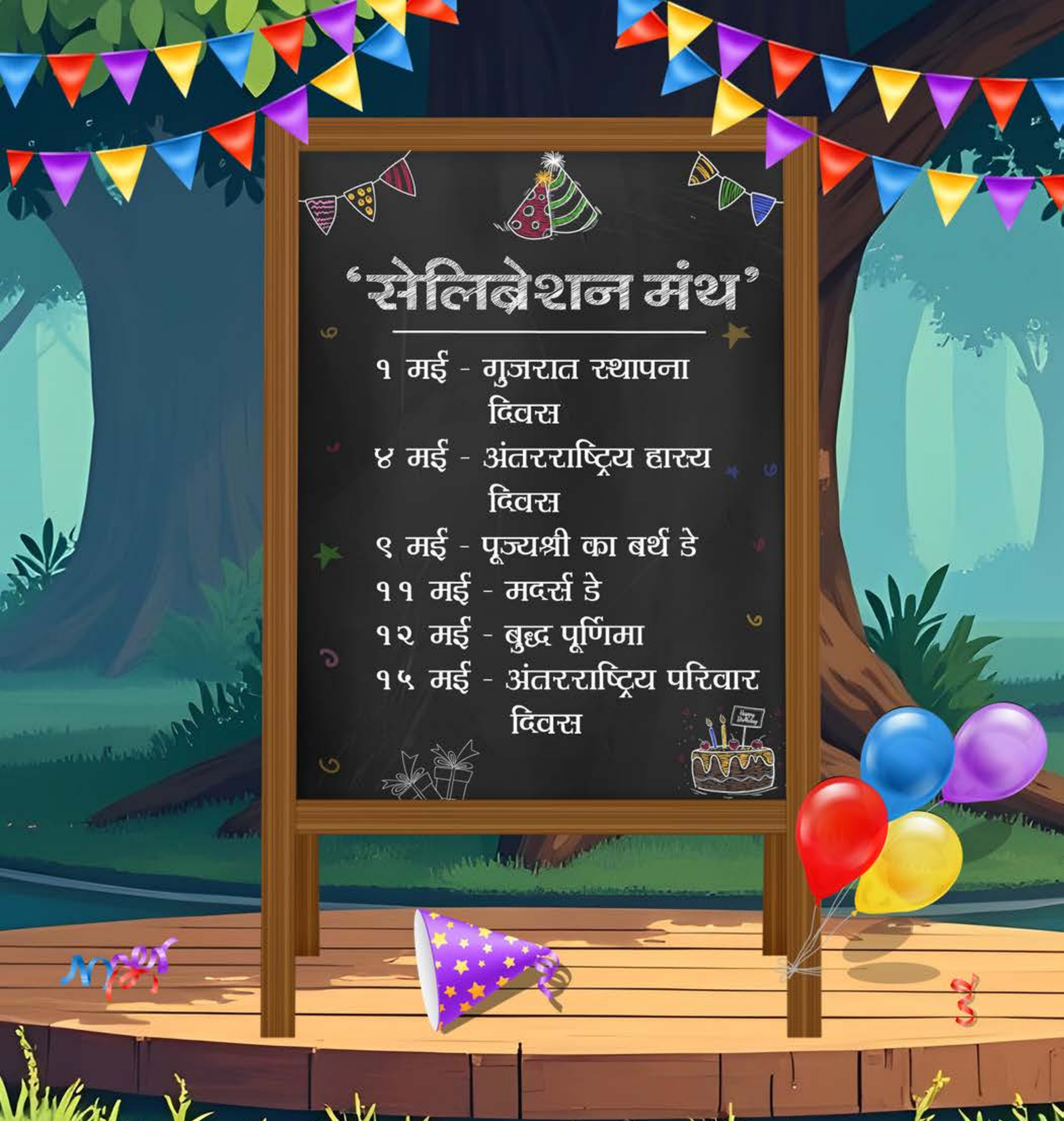

इन सभी दिनों को किस तरह सेलिब्रेट कर सकते हैं इस पर काफी देर तक चर्चा हुई। अंत में, सभी ने मिलकर कुछ पॉइन्ट्स तय किए। तो आइए देखते हैं कि डीडीमा जंगल में इन सभी दिनों को किस तरह मनाया गया।

गुल्लू, पोलो और मोमो ने मिलकर डीडीमा जंगल में तालाब के पास गुजरात पर एक प्रदर्शन तैयार किया। एन्ट्रेन्स को गुब्बारों और रिबन से सजाया। सचमुच ऐसा लग रहा था, मानो किसी का जन्मदिन मनाया जा रहा है।

एन्ट्री के तुरंत बाद दो भव्य फोटोज़ रखे थे। फोटोज़ को रंगबिरंगे फूलों की मालाओं से सजाया गया था। चारों ओर रंगोली बनाई गई थी और दीप भी प्रज्वलित किए गए थे। ऊपर की तरफ बड़े गोल्डन अक्षरों में लिखा था, 'गुजरात में जन्में ज्ञानी'। ये फोटोज़ थे, दादा भगवान और श्रीमद् राजचंद्रजी के।

दादा भगवान का फोटो तो इतना लाइव था कि हर किसी को दादाश्री की आँखों में देखकर ऐसा लग रहा था मानो दादा उनके सामने देखकर उन्हें आशीर्वाद दे रहें हैं।

आलू ने कहा, “हम कितने पुण्यशाली हैं कि गुजरात में ऐसे महान ज्ञानियों का जन्म हुआ और उन्होंने गुजराती भाषा में हमें ज्ञान दिया।”

सभी ने श्रीमद् राजचंद्र और दादा भगवान के चरणों में सच्चे दिल से सिर झुकाया और फिर आगे बढ़े।

महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल से लेकर धीरूभाई अंबानी, गौतम अडाणी और करसनभाई पटेल तक सभी महान लोग गुजरात से हैं, यह जानकर आलू-चिली को मज़ा आ गया।

आगे बढ़ने पर, गुजरात के ‘वर्ल्ड फेमस वैज्ञानिक’ डॉक्टर विक्रम साराभाई का फोटो था। अहमदाबाद में जन्मे डॉक्टर विक्रम साराभाई की बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धियों को पढ़ते-पढ़ते तो आलू-चिली की आँखें

थक गई। लेकिन दोनों को यह समझ में आ गया कि डॉक्टर विक्रम साराभाई 'फादर ऑफ द इन्डियन स्पेस प्रोग्राम' के रूप में जाने जाते हैं।

रिज़ो ने एक इन्ट्रेस्टिंग बात कही, "क्या आप लोगों को पता है? अहमदाबाद वर्ल्ड फेमस क्यों है? क्योंकि अहमदाबाद में दुनिया के सबसे टॉप इन्स्टिट्यूट्स हैं। जैसे कि, IIM-A, ATIRA, PRL और CEPT और क्या आप जानते हैं ये सब किसने बनाए है? डॉक्टर विक्रम साराभाई ने!"

अंत में गुजरात के लोकप्रिय स्थल और मंदिरों के फोटोज़ थे। यह देखकर थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स ने अपने ऐडवेन्चर प्लान कर लिए। मोढ़ेरा का 'सूर्य मंदिर' तथा भुज का 'स्मृतिवन म्यूज़ियम' उनकी लिस्ट में सबसे ऊपर थे।

"पता है? भुज का 'स्मृतिवन म्यूज़ियम' इंडिया का सबसे बड़ा म्यूज़ियम है!" ज़ोई ने कहा। "इंडिया का ही नहीं, वर्ल्ड के टॉप सात म्यूज़ियम में 'स्मृतिवन' का नंबर आता है।" रिज़ो ने उसकी बात सुधारते हुए कहा।

थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स अंबाजी, द्वारका और सोमनाथ मंदिरों में तो जा चुके हैं। इसलिए ज़ोई ने कहा, "इस साल वेकेशन में हम जूनागढ़ जाएँगे।"

"त्रिमंदिर देखने के लिए?" थीओ ने पूछा।

"हाँ! और इसलिए भी कि आने वाली चौबीसी के सभी तीर्थंकर जूनागढ़ से मोक्ष जाएँगे!" ज़ोई ने जवाब दिया।

थीओ ऐन्ड फ्रेन्ड्स का घूमने का प्लान बना। फिर आलू ने पूछा, "अरे! गुजरात के क्रिकेटर्स का क्या?!" "वह तो भूल गए!" मोमो ने सिर खुजलाते हुए कहा।

सभी एक साथ गुजरात के क्रिकेटर्स के नाम बोलने लगे। 'हार्दिक पंड्या', 'रविन्द्र जडेजा', 'इरफान पठान', 'पार्थिव पटेल'।

'बुमराह' के नाम को लेकर थोड़ा विवाद हुआ कि उसे गुजराती माना जाए या नहीं। लेकिन सभी इस निर्णय पर पहुँचे कि गुजरात में पले-बढ़े लोग गुजराती ही माने जाएँगे।

ऐसी दिलचस्प बातें जानकर हर कोई 'गुजराती' होने पर खुश था। अंत में सभी ने उत्साहपूर्वक तालाब पर गरबा किया और जलेबी-फाफड़ा और खमण-ढोकला खाकर गुजरात के जन्मदिन का समारोह समाप्त किया।

MAY 4

अंतरराष्ट्रीय हास्य दिवस

जिफ्फी सबको कॉमेडी कहानी सुनाने वाला था। उसने माइक हाथ में लिया। ज़ोई को चिंता थी कि जिफ्फी की कहानी सुनकर सबको हँसी आएगी या नहीं? अगर कॉमेडी कहानी सुनाते हुए जिफ्फी रो पड़ा तो?! ट्रैजडी हो जाएगी!! ज़ोई अपने विचारों में खोई हुई थी और यहाँ जिफ्फी ने कहानी सुनाना शुरू किया।

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन का पेट खराब हो गया। वैद्यजी ने मुल्ला को सुबह-शाम टहलने की सलाह दी।

एक दिन देर रात मुल्ला टहलने निकले। वे चलते-चलते शहर से दूर निकल गए। रास्ते में उन्होंने देखा कि तीन लोग उनकी ओर इशारा कर रहे थे। मुल्ला समझ गए कि ये डाकू हैं। वे बहुत तेज-तेज चलने लगे। मुल्ला आगे-आगे और डाकू पीछे।

चलते-चलते अचानक मुल्ला एक छोटी गली में मुड़ गए। गली कब्रिस्तान की तरफ जा रही थी।

थीओ ने बीच में पूछा, “कब्रिस्तान मतलब जहाँ कब्रें होती हैं? जहाँ मरने के बाद लोगों को दफ़नाया जाता है, वहाँ?!”

जिफ्फी ने ‘हाँ’ कहा। ज़ोई को फिर चिंता होने लगी कि यह ‘हॉरर’ स्टोरी है या

‘कॉमेडी’?! स्टोरी आगे बढ़ी।

मुल्ला को कब्रिस्तान में आधी खुदी हुई एक कब्र दिखाई दी। वे उसके अंदर जाकर सो गए। मुल्ला का पीछा करते हुए डाकू वहाँ आए और मुल्ला को धमकाकर कहा, “तुम हम से छुप रहे हो?!”

मुल्ला ने बहुत धीमी आवाज़ में कहा, “अरे, नहीं-नहीं! मैं तो अभी पिछले सप्ताह ही मरा था। और मुझे यहीं दफ़ना दिया था। लेकिन कभी-कभी ठंडी हवा खाने के लिए मैं बाहर निकलता हूँ। क्या करूँ? अंदर बहुत गर्मी लगती है ! मर गए तो क्या हुआ...? हमें भी तो थोड़ा बहुत घूमना पड़ता है न!”

डाकुओं के चेहरे देखने लायक हो गए। अचानक एक डाकू चिल्लाया, “भूत, भूत, भागो!!”

और तीनों दुम दबाकर भागे। मुल्ला कब्र में से उठे और धूल झाड़कर हँसते हुए अपने घर की तरफ चल दिए।

ज़ोई हँसने लगी और ताली बजाते-बजाते अपनी जगह पर खड़ी हो गई। सचमुच तो उसे हँसी इतनी नहीं आ रही थी जितनी राहत महसूस हो रही थी। उसे देखकर सभी ने तालियाँ बजाई। और सबको खुश देखकर जिफ्फी की आँखों में आँसू आ गए।

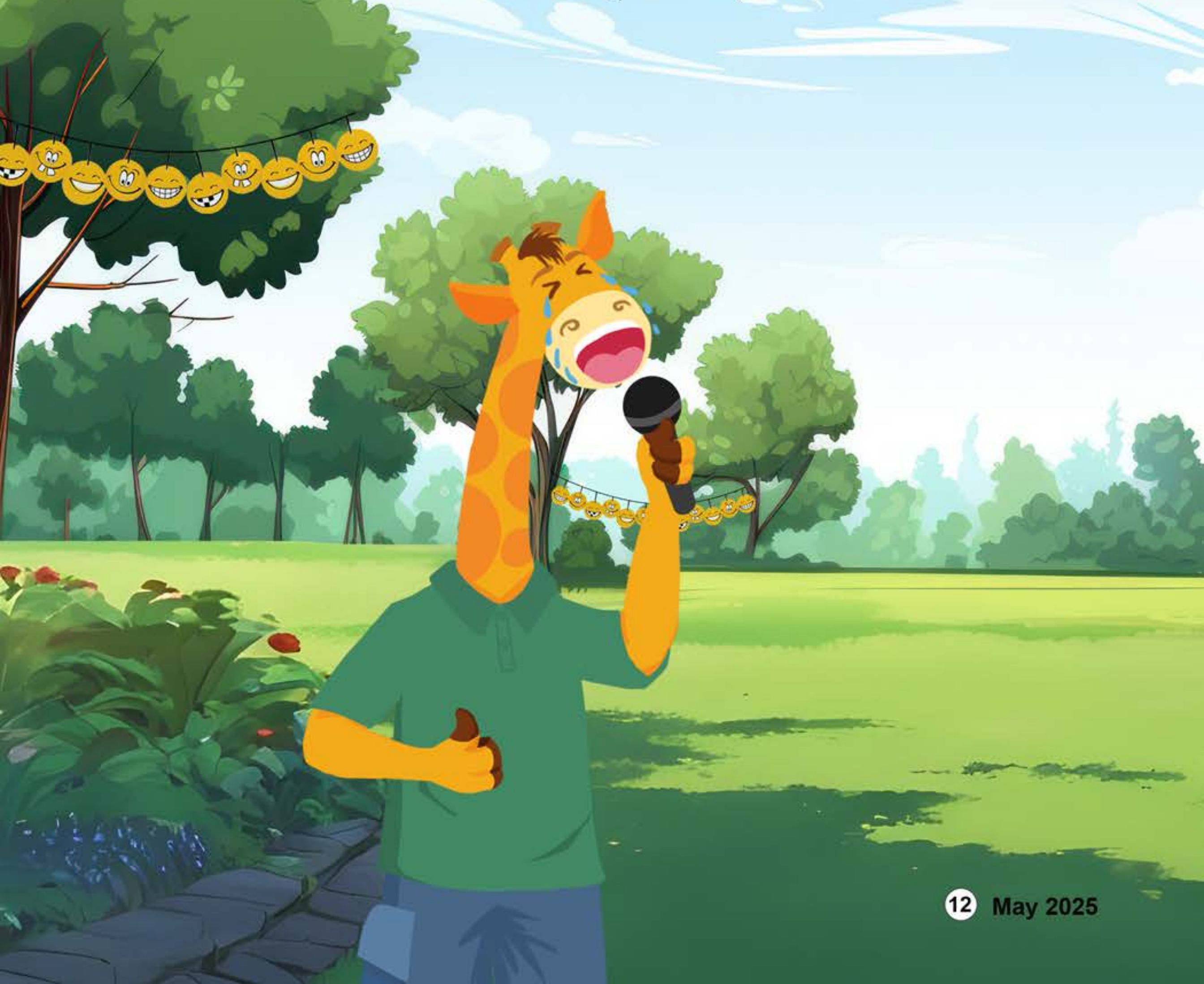

MAY 9

पूज्यश्री का बर्थ डे

उस दिन पूरे डीडीमा जंगल में उत्सव का माहौल था। रात को डीडीमा में सभी घरों के बाहर दीपक जलाए गए थे। पेड़ पर छोटी-छोटी लाइटों की लड़ियाँ लगाई गई थीं। गुब्बारों के गुंबद बनाए गए थे। सजे हुए छोटे-छोटे फ़ानूस पतली डोरियों से इस तरह लटकाए गए थे, मानो हवा में तैर रहे हों!

सजावट जितनी शानदार थी, उससे कई गुना अच्छा खाना बना था। थीओ के रेस्टॉरन्ट में इतना टेस्टी फूड इससे पहले कभी नहीं बना था। चिली और कोको ने पूज्यश्री के लिए ‘हैप्पी बर्थ डे’ सोंग गाया। फिर, पूज्यश्री का स्वास्थ्य हमेशा अच्छा बना रहे, ऐसी भावना के साथ सभी ने मिलकर ‘दादा भगवान ना असीम जय जयकार हो’ गाया। इसके बाद केक कटिंग की बारी थी। सबने पाइनैपल जिन्जर केक कट किया।

उसके बाद विक्की ने हाथ में माइक लेकर कहा, “पूज्यश्री हमें हमेशा आनंद में रहने के लिए कहते हैं न! तो चलो, एक ऐसा वीडियो देखते हैं जिसमें पूज्यश्री हमें आनंद करवाते हैं।” उस वीडियो के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रश्नकर्ता : मैं आपसे एक जनरल नॉलेज का प्रश्न पूछता हूँ, आप नीले पेन से लाल लिखकर बताइए।

पूज्यश्री : हें!!!

प्रश्नकर्ता : नीले पेन से लाल लिखकर बताइए।

पूज्यश्री : नीले पेन से लाल? यह तो लिख ही सकते हैं न... कितनी देर...? लाल।

प्रश्नकर्ता : आप वाइट कपड़े ही क्यों पहनते हैं? कोई दूसरे कलर के क्यों नहीं पहनते?

पूज्यश्री : उसका कारण है न... दाग लगने पर तुरन्त पता चल जाता है।

प्रश्नकर्ता : एक और प्रश्न है, अगर कोई कुत्ता आपके पीछे पड़ जाए तो आप क्या करेंगे?

पूज्यश्री : अगर पीछे गिर जाए तो उस बेचारे को उठाऊँगा। क्यों गिर गया? गिरे हुए को उठाना, इतना ही काम है मेरा। गिराने का काम मेरा नहीं है। आगे?

प्रश्नकर्ता : दीपक भाई, अगर आपको कहीं घूमने के लिए भेजा जाए, तो आप कहाँ जाना पसंद करेंगे?

पूज्यश्री : सीमंधर सीटी, त्रिमंदिर।

प्रश्नकर्ता : क्यों?

पूज्यश्री : क्योंकि भगवान के पास जाने मिलता है न। उनके दर्शन कर सकते हैं, उनकी भक्ति कर सकते हैं, उनकी तरह वीतराग बन सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : दीपक भाई, क्या आपने कभी खाना बनाया है?

पूज्यश्री : हाँ, बनाया है न।

प्रश्नकर्ता : आपने पहली बार किसे खिलाया था?

पूज्यश्री : नीरू माँ ने सिखाया था। फिर मैंने बनाया और हम सबने खाया। उस दिन नीरू माँ ने भी खाया था।

प्रश्नकर्ता : उस दिन आपने क्या बनाया था?

पूज्यश्री : तीखी भाखरी।

प्रश्नकर्ता : आपको कैसी लगी थी?

पूज्यश्री : मुझे बहुत मीठी लगी थी।

प्रश्नकर्ता : जय सच्चिदानंद।

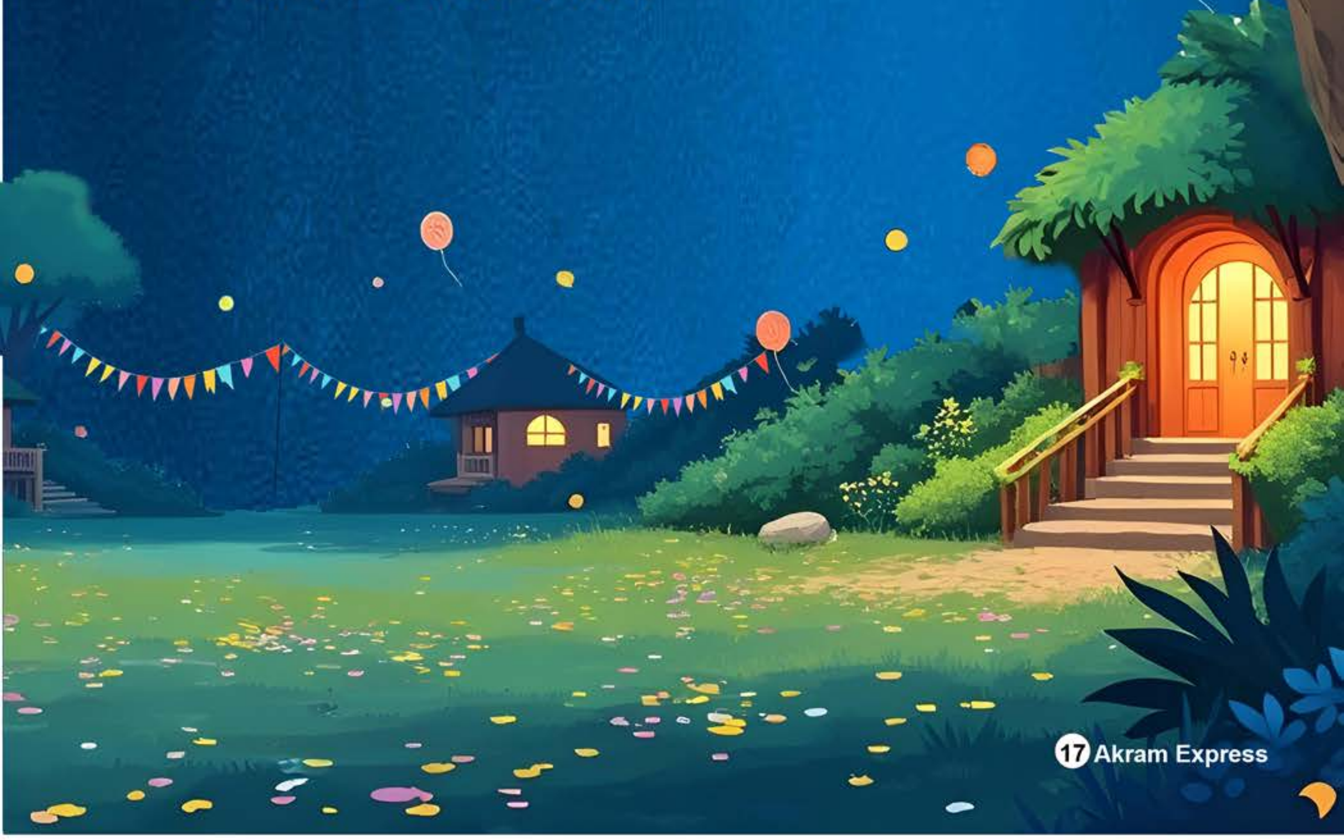

MAY 11

मदर्स डे

डीडीमा जंगल में सभी ने सोचा कि 'मम्मी हमारे लिए कितना कुछ करती है। चलो, इस मदर्स डे पर हम मम्मी के लिए कुछ स्पेशल बनाएँ।'

चाट बोट

सामग्री -

खीरा - ३
प्याज़ कटी हुई - १
टमाटर कटा हुआ -१
कैप्सिकम कटा हुआ - १/२ कटोरी
नींबू का रस - १ चम्मच
चिली फ्लेक्स - १ चम्मच
ऑरेगनो - १/२ चम्मच
केचप - २ चम्मच
काली मिर्च पाउडर - १/२ चम्मच
आलू भुजिया - १ पैकिट
चाट मसाला - १/२ चम्मच
नमक - स्वाद अनुसार

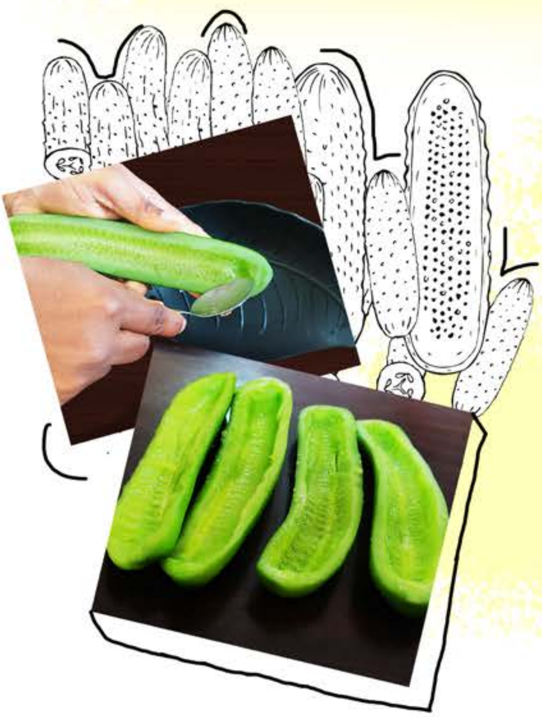

बनाने का तरीका -

सबसे पहले ख़ीरे के छिलके निकालकर उसे लम्बाई में बीच में से काटो और उसके अंदर से पल्प निकालकर फोटो में दिखाया गया है वैसे तैयार कर लो।

प्याज़, टमाटर, कैप्सिकम को काटकर मिक्स कर लो। उसके बाद उसमें दो चम्मच केचप, चिली फ्लेक्स, ऑरेगनो, काली मिर्च पाउडर, चाट मसाला, नींबू का रस और स्वाद के अनुसार नमक मिलाओ।

सब चीजों को अच्छे से मिक्स करके खीरे के बीचवाले हिस्से में यह मिश्रण भरो और उस पर आलू भुजिया डालकर गार्निश करो।

इसके बाद खीरे की पतली स्लाइस कट करके फोटो में बताए अनुसार टूथपिक की मदद से उसे बोट का आकार देकर बोट बनाओ।

MAY 12

बुद्ध पूर्णिमा

डीडीमा जंगल में सभी ने गौतम बुद्ध का नाम सुना था। लेकिन उनके बारे में किसी को कोई विशेष जानकारी नहीं थी। उस दिन डीडीमा जंगल में बुद्ध भगवान की प्रतिमा को लाया गया था। हर कोई ओली की कहानी सुनने को उत्सुक था। ओली ने चश्मा लगाया और कहानी सुनाना शुरू किया।

बुद्ध का जन्म प्राचीन भारत के कपिलवस्तु नगरी में एक बड़े राज परिवार में हुआ था। (यह जगह आज नेपाल में है।) जन्म के समय उनका नाम सिद्धार्थ था। उनके नामकरण के समय कई विद्वानों ने भविष्यवाणी

की थी कि वे एक महान राजा या एक महान सत्पुरुष बनेंगे। इस बात को कई साल बीत गए। सभी तरह के राजसी सुख होने के बावजूद उन्हें लगता था कि जीवन का लक्ष्य कुछ और ही होना चाहिए।

उनतीस साल की उम्र में जीवन के दुःखों से मुक्ति का मार्ग खोजने के लिए उन्होंने राजपाट छोड़ दिया और सन्यासी जीवन की शुरुआत की।

एक बार बुद्ध अपने शिष्यों के साथ एक गाँव से गुजर रहे थे। उस गाँव में अंगुलिमाल नाम के एक डाकू ने बहुत डर फैला रखा था। ऐसा कहा जाता था कि उसने एक हजार लोगों को मारने की प्रतिज्ञा ली थी। हजार की गिनती में कोई गलती न हो इसलिए वह जिसको मारता उसकी एक उंगली काट लेता और

उस उंगली को एक माला में पिरो देता था। वह माला वह अपने गले में पहनता था। इसी कारण लोग उसे 'अंगुलिमाल' कहते थे।

अंगुलिमाल नौ सौ निन्यानवे लोगों को मार चुका था। वह हजारवें व्यक्ति की तलाश में था। लोगों ने बुद्ध को अंगुलिमाल के पास जाने से रोका। लेकिन बुद्ध को किसी का डर नहीं था। वे अंगुलिमाल को इस हिंसा से बचाना चाहते थे। जैसे ही बुद्ध उस रास्ते से गुजरे, अंगुलिमाल की नज़र उन पर पड़ी और वह उन्हें मारने के लिए दौड़ा। लेकिन पता नहीं क्यों, अंगुलिमाल बहुत कोशिश करने पर भी उनके नजदीक नहीं पहुँच पा रहा था। वह ज़ोर से चिल्लाया, "ऐ... वहीं रुक जाओ!"

बुद्ध ने पीछे मुड़कर प्रेम से कहा, "मैं तो रुक गया हूँ, तुम क्यों नहीं रुकते?"

अंगुलिमाल पर बुद्ध के प्रेम और गजब की आंतरिक शांति का प्रभाव पड़ा। कुछ क्षण तक वह बुद्ध को देखता रहा। फिर कुछ देर रुकने के बाद उसने ऊँची आवाज़ में पूछा, "यानी क्या कहना चाहते हो तुम?"

बुद्ध ने कहा, "मैंने तो बहुत समय से लोगों को दुःख देना बंद कर दिया है। प्रेम और शांति का मार्ग अपना लिया है। तुम अपनी कमजोरियों से कब बाहर निकलोगे?"

अंगुलिमाल ने ज़ोर से कहा, "मैं और कमजोर? मैं तो बहुत शक्तिशाली हूँ। क्या यह उँगलियों की माला नहीं दिख रही?"

बुद्ध ने कहा, "हाँ। ये उंगलियाँ तो तुमने काट दीं। लेकिन क्या तुम उन्हें फिर से जोड़ सकते हो?" अंगुलिमाल चुप रहा।

बुद्ध ने कहा, "जिसे तुम जोड़ नहीं सकते उसे तोड़ने का तुम्हें क्या अधिकार है? जिन प्राणियों को तुम बना नहीं सकते, उन्हें मारने का कोई अधिकार तुम्हें नहीं है।"

बुद्ध के शब्दों में न जाने क्या जादू था कि अंगुलिमाल की आँखों से आँसू बहने लगे। उसने बुद्ध के चरणों में समर्पण कर दिया। कई सालों तक प्रायश्चित करके अंगुलिमाल अपने गुनाहों से मुक्त हो गया।

कहानी समाप्त होने पर ओली ने चश्मा उतारकर सब की ओर देखा। सभी बहुत गंभीर हो गए थे। जिफ्फी को सब कुछ धुँधला नज़र आ रहा था। रिज़ो ने जिफ्फी को आँखें पोंछने के लिए टिशू पेपर दिया। फिर सभी ने साथ मिलकर बुद्ध भगवान की प्रतिमा को हार पहनाया।

MAY 15

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस

डीडीमा जंगल को मिलजुलकर उत्सव मनाने के लिए क्या कोई 'परिवार दिवस' की ज़रूरत थी?! उनके लिए तो हर रोज ही 'परिवार दिवस' था। हर बार की तरह उस दिन भी तालाब पर अच्छी खासी चहल-पहल थी। गेम्स खेलना बंद करने के तुरंत बाद खाना परोसा गया।

टिगू का कज़िन भाई सांचेज़ मिज़ीपु वैकेशन में टिगू के पास रहने के लिए जंगल से आया था। आइस्क्रीम खाते हुए वह स्टेज पर गया और सबका ध्यान अपनी ओर खींचा, "दोस्तो, यह वैकेशन मेरे लिए बेस्ट वैकेशन

था। मैंने जो बात अपने घर पर ‘पावर कट’ की एक घटना के बाद सीखी, वह बात आप सबको पहले से ही पता है। और मुझे लगता है कि वही आप लोगों की खुशी का राज है।”

टिगू ने पूछा, “सांचेज़, तुमने ‘पावर कट’ के बाद क्या सीखा?”

सांचेज़ ने कहना शुरू किया,

उस रात रोज़ की तरह मम्मी हम सबको डाइनिंग टेबल पर खाना खाने के लिए बुला रही थीं। डैडी अपने लैपटॉप में बिज़ी थे। सिम्मी अपने फ्रेन्ड के साथ फोन पर बातें कर रही थी और मैं टी.वी पर गेम खेल रहा था।

मम्मी सिम्मी पर गुस्सा हो गई और कहा, "सोफे पर बैठे-बैठे थाली नहीं मिलेगी। डाइनिंग टेबल पर आना पड़ेगा और तुम्हें कितनी बार मना किया है कि फोन पर बात करते समय फोन चार्ज मत करो!"

फिर मेरी और पापा की बारी थी। लेकिन तभी अचानक अँधेरा हो गया। इलेक्ट्रिसिटी चली गई। मेरा टी.वी. बंद हो गया। कुछ देर बाद मम्मी ने डाइनिंग टेबल पर एक बड़ी सी मोमबत्ती जलाई।

कई दिनों बाद हम पहली बार एक साथ खाना खाने बैठे, साथ में दूसरा कोई काम किए बिना।

इतना मज़ा आया कि पूछो मत! पापा से स्कूल के दिनों की बातें सुनीं, मम्मी ने अपने ननिहाल की बातें बताईं और

सिम्मी ने अपने स्कूल के फ्रेन्ड्स की। मैंने तो हँसा-हँसाकर सबका पेट दुखा दिया। खाना हो गया पर हमारी बातें खत्म नहीं हुईं।

अंत में डैडी ने हमें अंग्रेजी की एक कहावत सुनाई, 'अ फैमली दैट इट्स टुगेदर, स्टेस टुगेदर!' अर्थात् जो परिवार साथ बैठकर खाना खाता है, वह हमेशा साथ रहता है!

सांचेज़ ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, "यह बात हम 'पावर कट' के बाद सीखे। लेकिन आप सब तो यह बात पहले से ही जानते हो। और इसलिए ही आप सभी इतना खुश रहते हो!"

आलू ने कोको का साथ दिया इसलिए चिली को बहुत गरम-गरम लगा। और वह कॉम्पिटिशन छोड़कर घर आ गया। चिली अपसेट था लेकिन आलू उसके पीछे नहीं आया। इससे चिली को और ज्यादा गरम लगने लगा। पार्सली को उल्लू बनाकर चिली थीओ के कैफे पर चला गया। अब पार्सली आगे की बात बताएगा...

अगर चिली को 'चिली शेक' पीना हो तो मुझे उसने कभी नहीं बताना चाहिए कि फ्रिज़ में 'चिली शेक' है। चिली भी न, बहुत भोला है! मैंने फ्रिज़ में रखा सारा 'चिली शेक' पी लिया। बाहर आकर देखा तो चिली कहीं नहीं था।

यह चिली कहाँ गया? मैंने हमारे घर के आस-पास हर जगह देखा। लेकिन वह कहीं भी दिखाई नहीं दिया।

हें?! यह चिली कहाँ उड़ गया? अब मैं उसे कहाँ ढूँढूँ? मुझे आलू भाई ने उसे पार्टी की जगह पर लाने के लिए कहा था। मैं घबराकर तालाब पर गया। वहाँ कॉम्पिटिशन बस खत्म ही हुआ था। जिफ्फी रोते हुए बोल रहा था कि "कोको अच्छा गाती है, लेकिन उसके शब्द उसकी आवाज़ से..." इतना कहते ही उसे जोर से रोना आ गया। जिफ्फी के आँसुओं से थीओ की टोपी गीली हो गई। थीओ ने उससे कहा, "तुम रोओ मत, हम नेक्स्ट ऐडवेन्चर पर कोको को अपने साथ ले जाएँगे, हम उसके बेस्ट फ्रेन्ड्स बनेंगे!"

मैंने दूर से देखा कि आलू भाई कोको के साथ कुछ बात कर रहे थे।

कोको कह रही थी, "आलू, थैंक यू, लेकिन तुम्हें रुकना नहीं चाहिए था। चिली को बहुत दुःख हुआ। मुझे तो आदत है... "

तभी आलू भाई बीच में बोल पड़े, “चिली मेरा बेस्ट फ्रेन्ड है! वह मुझे समझेगा। तुम चिंता मत करो। आज से तुम भी मेरी और चिली दोनों की फ्रेन्ड हो।” यह सुनकर कोको की आँखों में मोटे-मोटे आँसू आ गए। “तुम्हें पता है आलू, चिली तो एकदम नैचरल सिंगर है। उसने मेरे बाद गाना शुरू किया है, फिर भी मेरे से अच्छा गाता है। अगर आज वह अपसेट नहीं होता और उसने अपना सोंग नहीं बदला होता तो वही जीत जाता!”

यह बात सुनकर तो मेरी छाती फूल गई। कॉम्पिटिशन जीतने के बाद भी कोको मेरे भाई चिली की तारीफ़ कर रही थी। उस समय मैं बोले बगैर रह नहीं पाया, “वैसे देखा जाए तो कोको के पास बेस्ट सिंगर बने रहने के लिए अभी एक-दो साल और

हैं। फिर जब एक बार मैं गाना शुरू कर दूँगा तो मैं ही बेस्ट सिंगर कहलाऊँगा।" मेरी बात सुनकर आलू भाई हक्का-बक्का रह गए। पता नहीं क्यों!

उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम यहाँ? और चिली कहाँ है?"

अरे रे, मैं तो भूल ही गया कि मैं यहाँ क्यों आया था। मैंने कहा, "अरे हाँ, वह बताना तो रह गया। चिली उड़ गया। मैं उसके पीछे गया, लेकिन मुझे वह मिला नहीं। अब हम उसे कहाँ ढूँढेंगें?"

आलू भाई ने कहा, "वह उड़ते-उड़ते थक जाएगा तो कुछ ठंडा पीने के लिए थीओ के कैफे पर ज़रूर जाएगा ही।" आलू भाई चिली को मुझसे बेहतर जानते हैं। मुझे लगता है कि मैं आलू भाई के फोटो के साथ अखबार में एक ऐड दे दूँ कि मुझे भी उनके जैसा बेस्ट फ्रेन्ड मिल जाए।

मैं उस ऐड के वाक्य के बारे में सोच रहा था। तभी आलू भाई ने कहा, "कोको, तुम भी पार्टी में चलो!" मुझे लगा कि 'आलू भाई बहुत अच्छे हैं। लेकिन अगर चिली को अधिक बुरा लग गया और उनकी और चिली की, दोस्ती टूट गई तो?!' मैंने उनके कान में कहा, "भाई, चिली का मूड खराब है, रहने दो!"

"नहीं आलू, रहने दो!" लेकिन जैसे किसी की बात सुनी ही न हो इस तरह स्केट्स पहनकर आलू भाई बोले, "देखते हैं हममें से कौन पहले पहुँचता है!" इतना कहकर वहाँ से चले गए!

अब क्या होगा? चिली, जब कोको और आलू से थीओ के कैफे पर मिलेगा तब पार्सली और कोको का डर सही साबित होगा या आलू का विश्वास?!

और अंत में...

चलो 'गुजरात दिवस' का एक पोस्टर बनाएँ! इस अंक में पढ़ी हुई जानकारी के साथ दूसरी नई बातें जोड़कर अपनी सुंदर क्रिएटिविटी का उपयोग करके एक पोस्टर बनाएँ और उसका फोटो हमें इस ९३१३६६५५६२ पर WhatsApp करें।

और हाँ, हमें बताना मत भूलना कि आपने पूज्यश्री का बर्थ डे किस तरह मनाया।